अध्याय 3: मैं क्यों लिखता हूँ?

विषय-सूची

1 प्रश्नावली · 8 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 प्रश्न-अभ्यास 8 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?

हल

लेखक अज्ञेय के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव और अनुभूति में मूलभूत अंतर है।
अनुभव वह है जो व्यक्ति के साथ प्रत्यक्ष घटित होता है — जो आँखों से देखा जाता है।
किंतु अनुभूति उससे गहरी चीज़ है — वह संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेती है जो वास्तव में कृतिकार के साथ घटित नहीं हुआ।
लेखक ने हिरोशिमा के बारे में पहले केवल पुस्तकों में पढ़ा था, और बाद में अस्पताल में पीड़ितों को भी देखा — यह सब अनुभव था।
परंतु असली अनुभूति तब हुई जब उन्होंने हिरोशिमा की एक सड़क पर जले पत्थर पर मानव-छाया देखी।
उस छाया को देखकर उन्हें एक थप्पड़-जैसा अहसास हुआ — अणु-विस्फोट उनके अनुभूति-प्रत्यक्ष में आ गया, वे स्वयं उस विस्फोट के भोक्ता बन गए।
इस अनुभूति के बाद ही उनके भीतर की आकुलता बुद्धि के क्षेत्र से बढ़कर संवेदना के क्षेत्र में आई और उन्होंने हिरोशिमा पर कविता लिखी।
इसलिए लेखक मानते हैं कि कृति के लिए प्रत्यक्ष अनुभव पर्याप्त नहीं, जब तक वह अनुभूति में न बदल जाए।

उत्तर: लेखक के अनुसार अनुभव केवल घटित का होता है, किंतु अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेती है जो वास्तव में घटित नहीं हुआ। हिरोशिमा में जले पत्थर पर मानव-छाया देखकर उन्हें जो अनुभूति हुई, वही आंतरिक विवशता जागी जिसने कविता को जन्म दिया। अनुभव बौद्धिक होता है, अनुभूति संवेदनात्मक — और साहित्य-सृजन के लिए अनुभूति अनिवार्य है।

प्रश्न 2

लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

हल

लेखक ने हिरोशिमा के बारे में समाचारों और पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त किया था।
जापान जाने पर उन्होंने हिरोशिमा का वह अस्पताल भी देखा जहाँ रेडियम-पदार्थ से आहत लोग वर्षों से कष्ट पा रहे थे।
परंतु यह सब प्रत्यक्ष अनुभव मात्र था, उनके भीतर अनुभूति का स्पर्श अभी नहीं हुआ था।
फिर एक दिन वहाँ सड़क पर घूमते हुए उन्होंने एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया देखी।

यह छाया उस मनुष्य की थी जो विस्फोट के समय वहाँ खड़ा था — विस्फोट से बिखरे रेडियम-धर्मी पदार्थ की किरणें उसमें रुद्ध हो गई होंगी, जिन्होंने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया और पत्थर को झुलसा दिया।
इस प्रकार समूची त्रासदी जैसे पत्थर पर लिखी गई थी।
उस छाया को देखकर लेखक को जैसे एक थप्पड़-सा लगा — सारा इतिहास भीतर कहीं जलते हुए सूर्य की तरह उग आया और डूब गया।
उस क्षण अणु-विस्फोट उनके अनुभूति-प्रत्यक्ष में आ गया — एक अर्थ में वे स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट के भोक्ता बन गए।
इसी अनुभूति से उनके भीतर की आकुलता संवेदना के क्षेत्र में आई और उन्होंने भारत लौटकर रेलगाड़ी में बैठे-बैठे हिरोशिमा पर कविता लिखी।

उत्तर: लेखक ने हिरोशिमा की एक सड़क पर जले हुए पत्थर पर मानव-छाया देखी — जो उस व्यक्ति का अवशेष था जो विस्फोट में भाप बनकर उड़ गया था। उस छाया को देखकर उन्हें एक थप्पड़-सा लगा और अणु-विस्फोट उनके अनुभूति-प्रत्यक्ष में आ गया — वे स्वयं विस्फोट के भोक्ता बन गए। यही अनुभूति उनकी हिरोशिमा कविता की प्रेरणा बनी।

प्रश्न 3

मैं क्यों लिखता हूँ? के आधार पर बताइए कि— (क) लेखक को कौन-सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं? (ख) किसी रचनाकार के प्रेरणा स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?

हल

(क) लेखक को लिखने के लिए प्रेरित करने वाली बातें —
लेखक के अनुसार लिखने की सबसे पहली और सच्ची प्रेरणा है — आंतरिक विवशता।
यह वह भीतरी आकुलता है जिससे मुक्ति पाने के लिए, उसे तटस्थ होकर देखने और पहचानने के लिए लेखक लिखता है।
लिखकर ही लेखक उस आभ्यंतर विवशता को पहचानता है और लिखकर ही उससे मुक्त होता है।
इसके अतिरिक्त कभी-कभी बाहरी दबाव भी लेखन को प्रेरित करते हैं — संपादकों का आग्रह, प्रकाशक का तकाजा, आर्थिक आवश्यकता।
परंतु लेखक मानते हैं कि यह बाहरी दबाव भी वास्तव में भीतरी उन्मेष का निमित्त बन जाता है।
हिरोशिमा के संदर्भ में — जब जले पत्थर पर मानव-छाया देखकर अनुभूति हुई, तब भीतर से विवशता जागी और कविता लिखी गई।

(ख) रचनाकार के प्रेरणा स्रोत दूसरों को किस तरह उत्साहित कर सकते हैं —
जब कोई रचनाकार अपनी आंतरिक संवेदना और अनुभूति को रचना के माध्यम से व्यक्त करता है, तो वह रचना पाठक के भीतर भी उसी भाव को जगाती है।
यह जानकर कि एक अनुभूति ने किसी को लिखने या बनाने पर विवश किया, दूसरा व्यक्ति भी अपनी दबी हुई संवेदनाओं को पहचानने और उन्हें किसी रूप में व्यक्त करने के लिए प्रेरित हो सकता है।
अज्ञेय की हिरोशिमा कविता पढ़कर कोई चित्रकार, संगीतकार या अन्य लेखक भी युद्ध की विभीषिका पर कुछ

रचने की प्रेरणा पा सकता है।

इस प्रकार एक रचनाकार की अनुभूति-जनित रचना दूसरों के लिए सृजन का उत्प्रेरक बनती है।

उत्तर: (क) लेखक को मुख्यतः आंतरिक विवशता लिखने के लिए प्रेरित करती है — वह भीतरी आकुलता जिससे मुक्ति पाने के लिए वे लिखते हैं। कभी-कभी बाहरी दबाव (संपादक, प्रकाशक, आर्थिक ज़रूरत) भी भीतरी उन्मेष का निमित्त बनते हैं। (ख) एक रचनाकार की अनुभूति-जनित रचना दूसरों के भीतर भी वही संवेदना जगाती है और उन्हें अपनी दबी भावनाओं को किसी न किसी रूप में व्यक्त करने के लिए उत्साहित करती है।

प्रश्न 4

कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दबाव कौन-कौन से हो सकते हैं?

हल

लेखक अज्ञेय ने स्वयं इस निबंध में बाह्य दबावों का उल्लेख किया है।

पाठ के अनुसार बाह्य दबाव निम्नलिखित हो सकते हैं —

1. संपादकों का आग्रह — पत्रिका या समाचारपत्र के संपादक लेखक से विशेष विषय पर लिखने का आग्रह करते हैं।
2. प्रकाशक का तकाजा — पुस्तक प्रकाशित करने वाला प्रकाशक समय-सीमा में पांडुलिपि माँगता है।
3. आर्थिक आवश्यकता — जीविका चलाने के लिए लेखक को लिखना पड़ता है।

लेखक यह भी स्पष्ट करते हैं कि जो लेखक आलसी होते हैं, उनके भीतर की विवशता तभी स्पष्ट होती है जब बाहरी दबाव हो — जैसे घड़ी का अलार्म बजने पर उठना।

परंतु इन बाह्य दबावों के बावजूद एक सच्चा कृतिकार सदैव यह भेद बनाए रखता है कि कौन-सी कृति भीतरी प्रेरणा का फल है और कौन-सा लेखन बाहरी दबाव का।

लेखक मानते हैं कि बाहरी दबाव भी अंततः भीतरी उन्मेष (प्रकाश/दीप्ति) का निमित्त बन जाता है — वास्तव में वह दबाव नहीं रहता।

उत्तर: बाह्य दबाव तीन प्रकार के हो सकते हैं — (1) संपादकों का आग्रह, (2) प्रकाशक का तकाजा, और (3) आर्थिक आवश्यकता। लेखक के अनुसार यद्यपि ये बाहरी दबाव हैं, परंतु एक कृतिकार के लिए ये अंततः भीतरी उन्मेष का निमित्त बन जाते हैं।

प्रश्न 5

क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे?

हल

बाह्य दबाव केवल लेखकों को ही नहीं, बल्कि सभी क्षेत्रों के कलाकारों को प्रभावित करते हैं।

चित्रकार — किसी गैलरी या प्रदर्शनी के लिए एक निश्चित समय में चित्र बनाने का दबाव होता है।

संगीतकार — किसी फिल्म, कार्यक्रम या एलबम के लिए संगीत रचना की समयसीमा होती है।

नृत्यकार — किसी विशेष उत्सव या मंच-प्रदर्शन के लिए निर्धारित तिथि तक तैयारी करनी होती है।

वास्तुकार (आर्किटेक्ट) — परियोजना की समयसीमा और ग्राहक की माँग बाह्य दबाव होते हैं।
फिल्मकार — फिल्म की रिलीज़ तारीख, निर्माता का दबाव और बजट की सीमा बाह्य दबाव हैं।
इन सभी क्षेत्रों में बाह्य दबाव कलाकार को उसकी भीतरी प्रतिभा और भावना को एक निश्चित दिशा और समय में व्यक्त करने के लिए बाध्य करते हैं।
अज्ञेय के शब्दों में — जो लेखक के लिए सत्य है वही अन्य कलाकारों के लिए भी — बाह्य दबाव भीतरी उन्मेष का निमित्त बन जाता है।

उत्तर: बाह्य दबाव केवल लेखकों को ही नहीं, बल्कि संगीतकार, चित्रकार, नृत्यकार, फिल्मकार आदि सभी कलाकारों को प्रभावित करते हैं। प्रदर्शनी की समयसीमा, प्रायोजक का आग्रह, आर्थिक आवश्यकता — ये दबाव सभी रचनात्मक क्षेत्रों में विद्यमान हैं और अंततः कलाकार की भीतरी अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाते हैं।

प्रश्न 6

हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है, यह आप कैसे कह सकते हैं?

हल

हिरोशिमा पर लिखी गई कविता अज्ञेय के अंतः (भीतरी) और बाह्य (बाहरी) — दोनों दबावों का परिणाम है।
बाह्य दबाव के प्रमाण —
अज्ञेय विज्ञान के विद्यार्थी थे, इसलिए अणु-बम के वैज्ञानिक दुरुपयोग के प्रति बौद्धिक विरोध स्वाभाविक था।
हिरोशिमा की घटना के समाचार पढ़ना, परवर्ती प्रभावों का विवरण पढ़ना — यह सब बाहरी जानकारी और बाहरी उद्दीपन थे।
युद्धकाल में ब्रह्मपुत्र में बम फेंककर मछलियाँ मारते सैनिकों को देखना — यह भी बाहरी अनुभव था।
जापान जाकर हिरोशिमा देखना और पीड़ित लोगों को अस्पताल में देखना — यह भी बाह्य दबाव थे जिन्होंने उन्हें लिखने के लिए प्रेरित किया।

आंतरिक (अंतः) दबाव के प्रमाण —
जले पत्थर पर मानव-छाया देखकर जो अनुभूति हुई — वह पूर्णतः आंतरिक थी।
उस क्षण अणु-विस्फोट उनके अनुभूति-प्रत्यक्ष में आ गया — वे स्वयं भोक्ता बन गए।
यही भीतरी आकुलता संवेदना के क्षेत्र में आई और विवशता जागी।
यह कविता जापान में नहीं, भारत लौटकर रेलगाड़ी में बैठे-बैठे लिखी गई — बाहरी घटनास्थल से दूर, पूरी तरह भीतरी अनुभूति के वशीभूत होकर।
इस प्रकार बाह्य घटनाओं (विस्फोट का विवरण, जापान यात्रा, पत्थर की छाया) ने भीतरी अनुभूति को जगाया और दोनों के सम्मिलन से कविता का जन्म हुआ।

उत्तर: हिरोशिमा कविता के बाह्य दबाव थे — विस्फोट के समाचार, जापान यात्रा, पीड़ितों को देखना, और जले पत्थर पर मानव-छाया का दृश्य। आंतरिक दबाव था — उस छाया को देखकर उत्पन्न अनुभूति जिसने उन्हें स्वयं विस्फोट का भोक्ता बना दिया। बाह्य उद्दीपन ने भीतरी संवेदना को जगाया और दोनों के सम्मिलन से यह कविता लिखी गई।

प्रश्न 7

हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है?

हल

हिरोशिमा (1945) में अणु-बम गिराकर लाखों निर्दोष लोगों को मारना विज्ञान का सबसे भयावह दुरुपयोग है।
आज के संदर्भ में विज्ञान के दुरुपयोग के प्रमुख क्षेत्र —
1. परमाणु और रासायनिक हथियार — विश्व के अनेक देश परमाणु बम, रासायनिक और जैविक हथियार बना रहे हैं जो संपूर्ण मानवता के लिए खतरा हैं।
2. पर्यावरण प्रदूषण — औद्योगिक विकास के नाम पर कारखानों से निकलने वाला धुआँ और रासायनिक कचरा वायु, जल और भूमि को प्रदूषित कर रहा है।
3. साइबर अपराध — इंटरनेट और डिजिटल तकनीक का उपयोग धोखाधड़ी, जासूसी और आतंकवाद के लिए किया जा रहा है।
4. कृषि में हानिकारक रसायन — अत्यधिक कीटनाशकों और रासायनिक खादों का प्रयोग खाद्य-श्रृंखला को दूषित कर रहा है।
5. प्लास्टिक और ई-कचरा — प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक कचरे से पर्यावरण को स्थायी क्षति हो रही है।
6. मीडिया और सोशल मीडिया — तकनीक के माध्यम से गलत सूचना फैलाई जा रही है जिससे सामाजिक वैमनस्य बढ़ता है।
विज्ञान स्वयं तटस्थ है — उसका सदुपयोग या दुरुपयोग मनुष्य की नैतिकता और इरादे पर निर्भर करता है।

उत्तर: परमाणु हथियार, रासायनिक-जैविक शस्त्र, औद्योगिक प्रदूषण, साइबर अपराध, हानिकारक कीटनाशक और प्लास्टिक कचरा — ये सब विज्ञान के दुरुपयोग के प्रमुख उदाहरण हैं। विज्ञान स्वयं तटस्थ है; उसका उपयोग सृजन के लिए हो या विनाश के लिए — यह मनुष्य की नैतिकता पर निर्भर करता है।

प्रश्न 8

एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?

हल

एक संवेदनशील युवा नागरिक के रूप में विज्ञान के दुरुपयोग को रोकने में निम्नलिखित भूमिकाएँ निभाई जा सकती हैं —
1. जागरूकता फैलाना — विज्ञान के दुरुपयोग के खतरों के बारे में अपने परिवार, मित्रों और समाज में जागरूकता बढ़ाना।
2. पर्यावरण की रक्षा — प्लास्टिक का उपयोग कम करना, ऊर्जा की बचत करना और पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाना।
3. शांति और अहिंसा का समर्थन — परमाणु निरस्त्रीकरण और शांति-आंदोलनों का समर्थन करना तथा हिंसा का विरोध करना।
4. साइबर नैतिकता — इंटरनेट और सोशल मीडिया का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करना; गलत सूचना न फैलाना।
5. वैज्ञानिक सोच और नैतिकता — वैज्ञानिक अध्ययन में नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देना और अनैतिक प्रयोगों का विरोध करना।

6. सामाजिक संगठनों में भागीदारी — पर्यावरण, शांति या विज्ञान-नैतिकता से जुड़े संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाना।

7. नेताओं और नीति-निर्माताओं पर दबाव — लोकतांत्रिक माध्यमों से सरकार पर यह दबाव बनाना कि विज्ञान का उपयोग मानव-कल्याण के लिए हो, विनाश के लिए नहीं।

हिरोशिमा की त्रासदी हमें याद दिलाती है कि एक जागरूक नागरिक की आवाज़ ही विज्ञान के दुरुपयोग को रोकने की सबसे बड़ी शक्ति है।

उत्तर: एक संवेदनशील युवा नागरिक के रूप में हम जागरूकता फैला सकते हैं, पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं, साइबर नैतिकता का पालन कर सकते हैं, शांति-आंदोलनों का समर्थन कर सकते हैं और नीति-निर्माताओं पर लोकतांत्रिक दबाव बना सकते हैं कि विज्ञान का उपयोग मानव-कल्याण के लिए हो, विनाश के लिए नहीं।